13-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - बाप आये हैं सारी दुनिया से विकारों की तपत बुझाए सबको शीतल बनाने, ज्ञान बरसात शीतल बना देती है"

प्रश्नः-कौन सी तपत सारी दुनिया को जला रही है?

उत्तरः-काम विकार की तपत सारी दुनिया को जला रही है। सब काम अग्नि में जलकर काले हो गये हैं। बाप ज्ञान वर्षा से उन्हें शीतल बनाते हैं। जैसे बरसात पड़ने से धरती शीतल हो जाती है तो इस ज्ञान वर्षा से 21 जन्मों के लिए तुम शीतल बन जाते हो। किसी भी प्रकार की तपत नहीं रहती। तत्व भी सतोप्रधान बन जाते हैं। कोई भी तपते नहीं हैं।

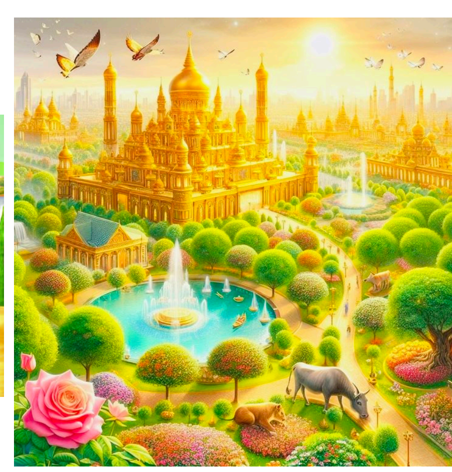

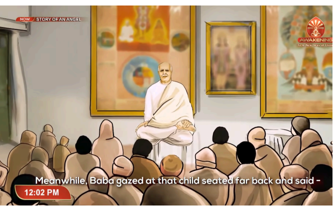

ओम् शान्ति। रूहानी बच्चे किसकी याद में बैठे हैं? जरूर अपने रूहानी बाप की याद में बैठे हैं। रूह अपने परमपिता परमात्मा की याद में बैठी है कि हमको रूहानी बाप आकर रिफ्रेश कर शीतल बनायें, क्योंकि काम चिता पर बैठ भारत जल मरा है। गाते भी हैं तपत बुझाये। तपत काहे की? काम चिता की। बहुत तपत होती है तो मनुष्य मर पड़ते हैं। इस काम चिता की तपत में भारत एकदम जल मरा है इसलिए बाप को याद करते हैं कि आकर शीतल बनाओ। बरसात पड़ने से शीतलता हो जाती है। धरती शीतल हो जाती है। यह तो बरसात है ज्ञान की। एक ही बार आकर इतना शीतल बनाते हैं। इतना सब कुछ दे देते हैं जो सतयुग में कोई भी चीज़ की उत्कण्ठा नहीं रहती है। आधाकल्प उत्कण्ठा में रहते आये हो - बाबा आकर शीतल बनाओ। पतित-पावन बाप आकर हमको शीतल बनाये। इस ज्ञान वर्षा से भारत अथवा सारी दुनिया शीतल हो जाती है। तुम स्वर्ग के मालिक बन जाते हो। मनुष्य मरते हैं तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। वह तो सिर्फ मुख मीठा करते

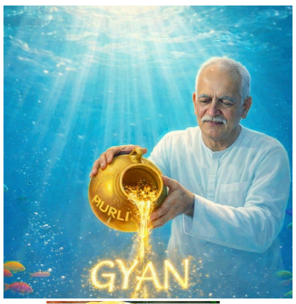

हैं। तुम जानते हो स्वर्ग की अब स्थापना हो रही है। बाबा आया हुआ है, यह ज्ञान वर्षा कर रहे हैं। शीतलता का असर 21 जन्म रहता है। वहाँ न बरसात, न किसी भी चीज़ की इच्छा रहती है। सदैव बहार ही बहार रहती है। वहाँ कोई भी प्रकार का दु:ख नहीं रहता। सूर्य भी सतोप्रधान बन जाता है। कभी तपत नहीं दिखाते हैं। तुम सारे विश्व के मालिक बन जाते हो। अभी तो गुलाम हैं ना। गाते हैं मैं गुलाम, मैं गुलाम तेरा..., बाप को याद करते हैं। अब बाप कहते हैं - तुम्हारी सेवा में मैं तुम्हारा

How humble my baba is...!

गुलाम आकर बना हूँ। तुम बच्चों की सेवा करता हूँ। पराये, पतित देश, पतित शरीर में मैं आता हूँ। इस पतित दुनिया में एक भी पावन हो नहीं सकता। सतयुग को पावन, कलियुग को पतित कहा जाता है क्योंकि सब विकारी हैं। भारतवासी ही इस नॉलेज को समझेंगे। जिन्होंने 84 जन्म लिए हैं वही यह नॉलेज सुनेंगे वा जो सतयुग-त्रेता में आने वाले हैं वही आकर ब्राह्मण बनेंगे, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप ने समझाया है अभी तुम ब्राह्मण वर्ण में हो फिर वही देवता वर्ण

नाज उठाते हमें बिठाते, आप तो अपने कंधों पर
याद-प्यार दे करते नमस्ते, बली-बली जाते बच्चों पर
ऐसे प्यार का मधुरस पी के, सब रस लगते फीके हैं
मीठे बच्चे मीठे बच्चे बोल ये कितने मीठे है
मीठा हमे बनाते बाबा, आप बड़े ही मीठे है

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वत: ॥

हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३ ॥ Adhyay-7

Point to be Noted

में आयेंगे। ब्राह्मण वर्ण अर्थात् ब्राह्मण धर्म स्थापन करने बाप आते हैं। ब्रह्मा, ब्राह्मण धर्म स्थापन करते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कि परमपिता परमात्मा आकर शूद्रों को ब्राह्मण बनाते हैं। यह तुम्हारी बाजोली चलती है। यह तो बहुत सहज है। तुम जानते हो यह चक्र कैसे फिरता है? विराट रूप में ब्राह्मणों की चोटी और शिवबाबा को भूल गये हैं। कहते हैं देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र... फिर शूद्र से देवता। अब ब्राह्मण कहाँ गये? ब्राह्मण लोग गाते भी हैं ब्राह्मण देवताए नम:। तब प्रजापिता ब्रह्मा की वंशावली कहाँ गये? प्रजापिता ब्रह्मा का नाम कितना बाला है। चित्रों में भी कितनी भूल कर दी है। प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद का कोई नाम-निशान नहीं है। स्कूल में टीचर पढ़ाते हैं। वह फिर भी सोर्स ऑफ इनकम है। एम आब्जेक्ट तो जरूर चाहिए। तुम बच्चे जानते हो उस पढ़ाई से ही मर्तबा मिलता है। पतित दुनिया में भगवान आकर पतितों को पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं - मैं तुम बच्चों को पढ़ाकर पावन बनाता हूँ। इस पढ़ाई से इनकम देखो कितनी भारी है। आधाकल्प के लिए तुम

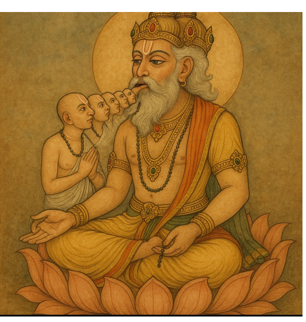

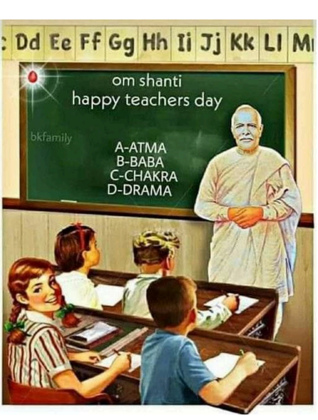

तकदीर बनाते हो। भारत में गाया हुआ है 21 पीढ़ी, अब तुम बेहद के बाप से 21 पीढ़ी बेहद का वर्सा पाते हो। लौकिक बाप का है अल्पकाल क्षण भंगुर का वर्सा। इस बाप से तुम ऐसा वर्सा पाते हो जो पीढ़ी बाई पीढ़ी तुमको दु:ख नहीं रहेगा। भारत में ही बेहद का सुख था। यह ज्ञान और किसकी बुद्धि में नहीं है। यह ज्ञान देने वाला बाप जाने और जिनको देते हैं वह जाने, और न जाने कोई। ग्रंथ में भी उनकी महिमा गाई हुई है। एकोअंकार... निराकार, निर-अहंकार। इसका अर्थ भी अभी तुम समझते हो। वह तो सिर्फ गाते हैं निरहंकारी। इतनी बड़ी अथॉरिटी होते हुए भी उनको कोई अहंकार नहीं है। यहाँ थोड़ी भी पोजीशन वाले होते हैं तो कितना नशा उन्हों को रहता है। वह है अल्पकाल वाले मर्तबे का नशा कि मैं फलाना हूँ... अब तुमको इस रूहानी पढ़ाई का नशा है। तुम्हारी आत्मा अभी जानती है - आत्म-अभिमानी बनना है Then only तब ही बाप को याद कर सकेंगे। बाप के साथ योग टूटने से माया का गोला लग जाता है, मुरझा जाते हैं। याद करते रहें तो खुशी का पारा चढ़ा रहे। कोई

m.m.m....imp.

Point to be Noted

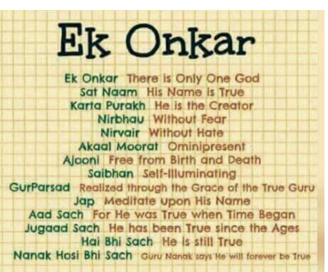

How humble my baba is...!

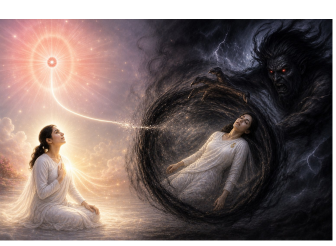

Points: ज्ञान योग धारणा M.imp.

13-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बड़ा इम्तहान पास करते हैं तो खुशी होती है। समझते हैं बस इसके ऊपर कोई और पढ़ाई नहीं है। तुम भी जानते हो हमारी इस पढ़ाई से ऊंच और कोई पढ़ाई है नहीं। इन लक्ष्मी-नारायण ने पास्ट में जरूर ऐसी पढ़ाई की है। राजयोग सीखे हैं तब महाराजा महारानी बने हैं। राजयोग तो मशहूर है। परमपिता परमात्मा आकर राजयोग सिखाते हैं - स्वर्ग के लिए। कहते भी हैं पास्ट में ऐसे कर्म किये हैं तब यह बने हैं।

तुम जानते हो - इस जन्म में हम ऐसे कर्म सीखते हैं जो भविष्य 21 जन्म के लिए राज्य करेंगे वा स्वर्ग में विराजमान होंगे। यथा राजा, रानी तथा प्रजा भी है ना। राजधानी है ना। बाप आया है - राजधानी स्थापन करने। फिर तुम जाकर 21 जन्म पालना करेंगे। 63 जन्म तो दु:ख भोगा है। वह सब खत्म हो जायेंगे। भारत को स्वर्ग कहा जाता है, अभी तो नर्क है। सृष्टि कितनी बदल गई है। वह

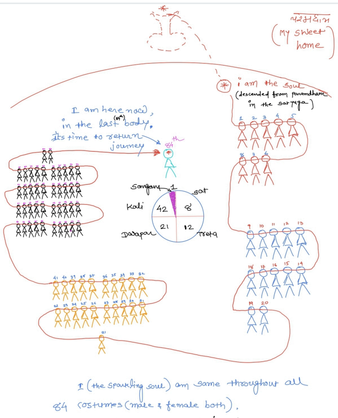

I (the sparkling soul) am same throughout all 84 costumes (male & female both).
I am immortal, eternal, imperishable. The costumes are perishable.

Geeta Adhyay: 2 shloka

न जायते म्रियते वा कदाचि नायं भूत्वा भविता वा न भूयः | अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ||20||
The soul is neither born, nor does it ever die; nor having once existed, does it ever cease to be.
The soul is without birth, eternal, immortal, and ageless. It is not destroyed when the body is destroyed.

It's very long journey we have. Now, its time to return in our sweet silence home to rest in the lap of our sweet father shiva.

श्रीभगवानुवाच Adhyay: 4
बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप॥
श्रीभगवान् बोले—हे परंतप अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत-से जन्म हो चुके हैं। उन सबको तू नहीं जानता, किन्तु मैं जानता हूँ॥ ५॥

13-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

राजाई कहाँ चली गई? रावण राज्य शुरू होने से फिर तुम पतित बन जाते हो। बाप कहते हैं तुम अपने 84 के चक्र को नहीं जानते हो। अभी तुम बच्चों को बार-बार समझाया जाता है। तुमने 84 जन्मों का चक्र पूरा किया है। अभी तुम्हारा यह अन्तिम जन्म है। अब फिर से अपना वर्सा लेना है। तुमको मुक्तिधाम में बैठ नहीं जाना है। तुम्हारा आलराउन्ड पार्ट है। ऐसे बहुत हैं जो सतयुग से लेकर द्वापर कलियुग तक भी मुक्तिधाम में रहते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे यहाँ आने से मुक्तिधाम अच्छा है। वह तो मच्छरों सदृश्य हो गया। आया और यह गया। मनुष्यों की महिमा गाई जाती है। यह मन्दिर किसके हैं? जो शुरू से लेकर पार्ट बजाते आये हैं, उन्हों के ही यादगार बनते आये हैं। पिछाड़ी में जो आते हैं उन्हों का यादगार है क्या? कुछ भी नहीं। तुम्हारा कितना भारी यादगार है। सबसे जास्ती तुम पार्ट बजाते हो। तुम अपनी प्रालब्ध का टाइम पूरा कर जब भक्ति मार्ग में आते हो तब फिर तुम्हारा यादगार तथा शिवबाबा के मन्दिर बनने शुरू होते हैं, फिर और धर्म आते हैं। उन्हों का धर्म स्थापन

Point to ponder deeply...

8 अरब की आबादी तक का सफर

आबादी	साल	कितने वर्ष लगे
1 अरब	1804	पहली बार दुनिया में 1 अरब लोग हुए
1 से 2 अरब	1804 से 1927	123 साल लगे
2 से 3 अरब	1927 से 1960	33 साल
3 से 4 अरब	1960 से 1974	14 साल
4 से 5 अरब	1974 से 1987	13 साल
5 से 6 अरब	1987 से 1999	12 साल
6 से 7 अरब	1999 से 2011	12 साल
7 से 7.9 अरब	2011 से 2022	11 साल

15 नवंबर 2022 को होंगे आठ अरब लोग

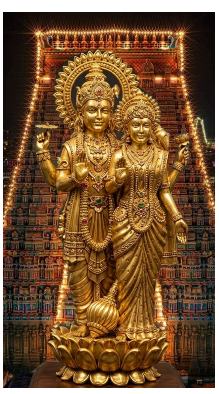

nts: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

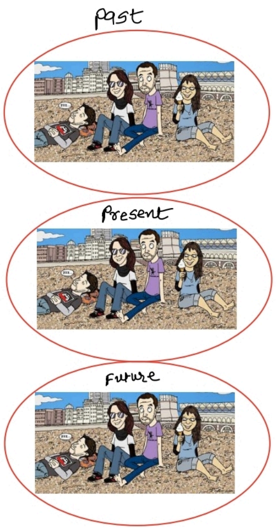

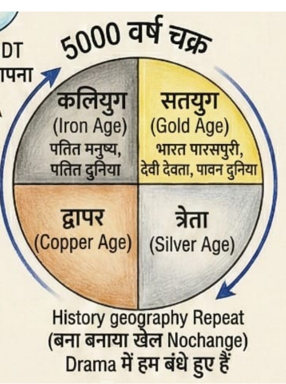

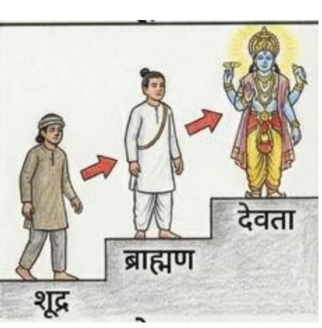

होता है। तुम अपनी हिस्ट्री-जॉग्राफी भी जानते हो और सब धर्म वालों की भी जानते हो। 84 जन्मों की सीढ़ी है। पहले हम स्वर्ग में आते हैं फिर उतरते कैसे हैं - यह तुम्हारी बुद्धि में है। हर एक जन्म में भिन्न नाम रूप वाले मित्र-सम्बन्धी आदि मिले हैं। यह सब ड्रामा में तुम्हारा पार्ट पहले से ही नूँधा हुआ है। यह बेहद का ड्रामा है, जो हूबहू रिपीट होता है। तुम जानते हो हम सो देवी-देवता थे जो 84 जन्म ले शूद्र बनें। फिर हम सो देवी-देवता बनते हैं। मनुष्य तो कह देते आत्मा सो परमात्मा। वास्तव में हम सो का अर्थ यह है। वह फिर कह देते आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा। रात-दिन का फ़र्क है ना। तुम अभी इन सब बातों को जानते हो। तुम अभी पाण्डव बने हो। कौरव पाण्डव भाई-भाई थे ना। अभी बाप मिला है तो तुम कौरव से पाण्डव बने हो। बाप तुमको दु:ख से लिबरेट कर गाइड बन ले जाते हैं। घर का तो किसको पता नहीं है। वह कहते हैं आत्मा ब्रह्म में लीन हो जायेगी। तो घर थोड़ेही ठहरा। घर में तो रहा जाता है। उनको इनकारपोरियल वर्ल्ड कहा

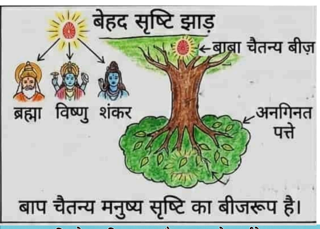

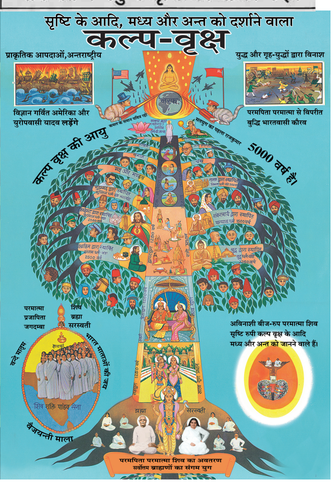

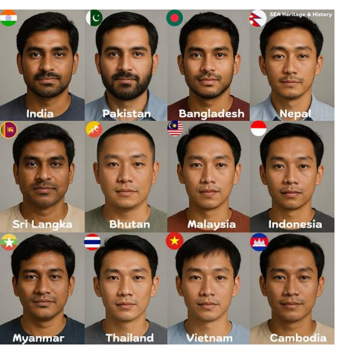

जाता है। अभी तुम बच्चे जानते हो - हम निराकारी आत्मा निराकार वर्ल्ड में बिन्दी मिसल निवास करते हैं। वहाँ भी निराकारी झाड़ है। यह ड्रामा बना हुआ है। बीज और झाड़ को जानना है। इसका नाम ही है वैराइटी धर्मो का झाड़, यह मनुष्य सृष्टि है। इनका बीजरूप बाप है, कितनी वैराइटी है। हर एक धर्म वाले के फीचर्स न्यारे फिर यहाँ भी एक की शक्ल न मिले दूसरे से। यह भी ड्रामा बना हुआ है। कल्प वृक्ष की आयु 5 हजार वर्ष है - यह बाप ही समझाते हैं। मनुष्य एक्टर्स हैं, यहाँ पार्ट बजाने आते हैं। यह माण्डवा है, रोशनी के लिए सूर्य चांद आदि हैं। यह कोई देवता थोड़ेही हैं, यह तो बत्तियां हैं। परन्तु सर्विस करते हैं, इसलिए देवता कह देते हैं। वास्तव में देवतायें कोई सर्विस नहीं करते हैं, सर्विस तो तुम बच्चे करते हो। बाप ओबीडियन्ट सर्वेन्ट है। बच्चे दु:खी होते हैं, तो बाप को तरस पड़ता है। बाप आये हैं समझाने। तुम बच्चों को फिर से सो देवी-देवता पद प्राप्त कराने आता हूँ। चढ़ती कला, उतरती कला हर चीज़ की होती है। पुरानी दुनिया को तमोप्रधान,

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

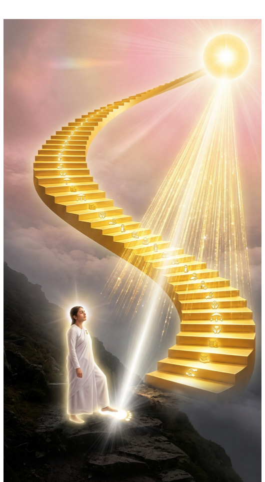

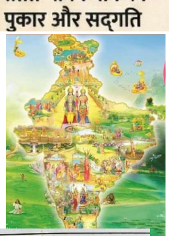

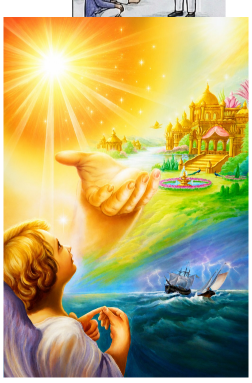

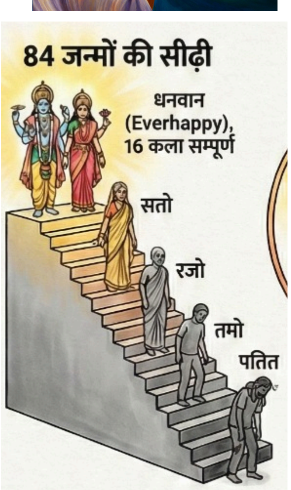

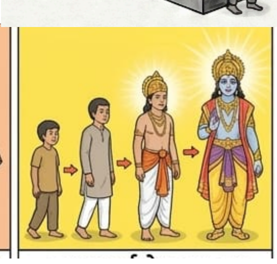

नई दुनिया को सतोप्रधान कहा जाता है। हर एक चीज़ नई सो पुरानी होती है। आत्मा कहती है - यह शरीर भी तमोप्रधान पतित है। यह सतयुग में आत्मा और शरीर सतोप्रधान थे। माथा नहीं खपाते थे। आत्मा को अब ज्ञान मिला है। स्मृति आई है, हम 84 जन्म लेते हैं। यह राज़ बेहद का बाप समझाते हैं। दु:ख में बाप को ही पुकारते रहते हैं। रहम करो हे दु:ख हर्ता सुख कर्ता... भारत ही सबसे सुखी था ना। भारत जैसा पवित्र खण्ड और कोई हो नहीं सकता। अभी बाप तुम बच्चों की झोली अविनाशी ज्ञान रत्नों से भरते हैं। कभी ऐसा बाप देखा है। कहते हैं बच्चों, मैं तुम्हारे लिए How Sweet...! बैकुण्ठ सौगात मे लाया हूँ। तुम स्वर्गवासी थे, अब पतित नर्कवासी बन पड़े हो। Definition of पावन उनको कहा जाता है जो विकार में नहीं जाते हैं। सतयुग में हैं सम्पूर्ण निर्विकारी। इस समय हैं - सम्पूर्ण विकारी। बाप कहते हैं तुम भी सम्पूर्ण निर्विकारी थे। अब सम्पूर्ण विकारी बने हो, फिर सम्पूर्ण निर्विकारी देवता पद पाना है - बाप को याद करने से। अक्षर देखो कितने अच्छे हैं - मनमनाभव। मुझ बाप को

Words of world Almighty Authority

13-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

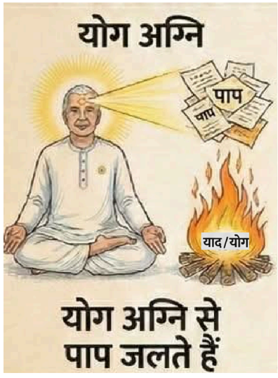

याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। मैं सर्वशक्तिमान् हूँ ना। मुझे याद करो। याद को ही योग अग्नि कहा जाता है, जिससे तुम्हारे पाप दग्ध होंगे। तुम पवित्र बन जायेंगे। अच्छा!

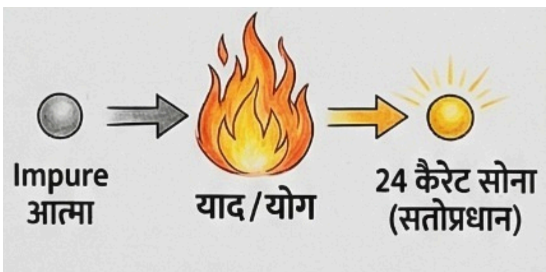

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

13-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

धारणा के लिए मुख्य सार:-

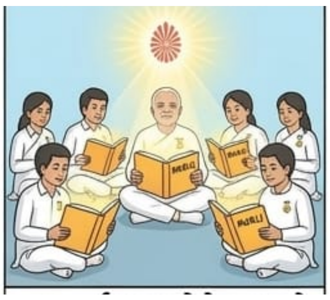

1) रूहानी पढ़ाई के नशे में रहना है। बाप समान निरहंकारी बनना है। पोजीशन आदि का अहंकार नहीं रखना है।

2) अपनी झोली ज्ञान रत्नों से भरनी है। सम्पूर्ण निर्विकारी बन देवता पद पाना है। कभी भी मुरझाना नहीं है।

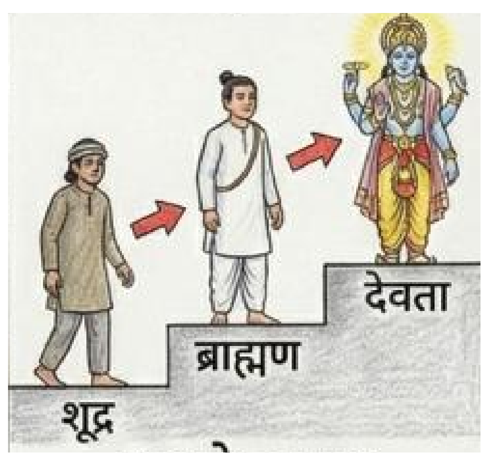

13-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- स्थूल और सूक्ष्म दोनों रीति से स्वयं को बिजी रखने वाले मायाजीत, विजयी भव

Most imp

Not By Force

स्वयं को सेवाधारी समझ अपनी रुची, उमंग से सेवा में बिजी रहो तो माया को चांस नहीं मिलेगा।

जब संकल्प से, बुद्धि से, चाहे स्थूल कर्मणा से फ्री रहते हो तो माया चांस ले लेती है।

समझा?

लेकिन स्थूल और सूक्ष्म दोनों ही रीति से खुशी-खुशी से सेवा में बिजी रहो तो खुशी के कारण माया सामना करने का साहस नहीं रख सकती

इसलिए स्वयं ही टीचर बन बुद्धि को बिजी रखने का डेली प्रोग्राम बनाओ तो मायाजीत, विजयी बन जायेंगे।

Self Checking

स्लोगन:-निश्चय और फलक से कहो "बाबा मेरे साथ है" तो माया समीप आ नहीं सकती।

Poi

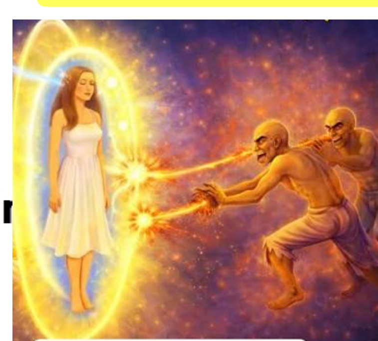

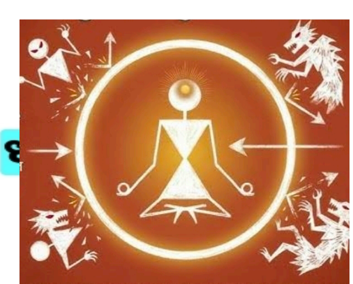

M.imp.

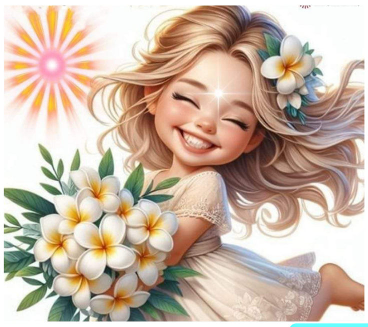

ये अव्यक्त इशारे -

सदा हर्षित रहने के लिए

अपनी नेचर को सरल बनाओ, सहनशील बनो।

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

बापदादा सभी बच्चों के चलन और चेहरे में, बोल व कर्म में सरलता और मधुरता देखने चाहते हैं।

समझा?

Checking Parameters

अगर आवेशता या थकावट के कारण थोड़ा भी बोल मधुर नहीं है, चेहरा मधुर नहीं है, सीरियस है तो गुण सम्पन्न नहीं कहेंगे।

कैसे भी सरकमस्टॉन्स हो लेकिन मेरा जो गुण है, वह मेरा गुण इमर्ज होना चाहिए।

जैसे बापदादा वैसे हूबहू (Ditto) वही गुण, वही कर्तव्य, वही बोल, वही संकल्प अनुभव हो, सभी के मुख से निकले "यह तो वही लगते हैं"।

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans May 26 → Click

All अव्यक्त इशारे May 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

ओम शांति ,
1 जून से टीम हाइलाइटेड मुरली ने एक नई पहल शुरू की है इस Mind map के रूप में।

इस नई पहल का उद्देश्य यह है कि
आप दिन में कर्म करते हुए या ट्रैवलिंग करते हुए कहीं पर भी, थोड़े से ही समय में ज्ञान,योग,धारणा और सेवा जो हमारे चार मुख्य सब्जेक्ट है उसके main Points को Quickly Revise कर सके और उसका मंथन करते हुए बाबा की याद में एवं स्वदर्शन चक्र फिराने में डूबे रह सके जिससे कि व्यर्थ के आने की कोई मार्जिन ही न रहे।

मीठे बापदादा हमसे चाहते है कि "मेरा हर एक बच्चा व्यर्थ से मुक्त बन जाए।" और व्यर्थ मिटाने का सबसे सरल साधन है निरन्तर समर्थन चिन्तन। और मुरली है सर्व समर्थ साधन - क्योंकि मुरली है सर्व शक्तिमान शिवबाबा का मन। तो मुरली के मंथन में व्यस्त रहना अर्थात उस Supreme powerhouse से अपने मन की तार को जोड़ना।

चूं की यह एकदम नई सेवा है तो आप अपना feedback अवश्य भेजें ताकि Team इस सेवा का एनालिसिस कर के सेवा में improvement कर सके एवं इस सेवा की दिशा को भी जान सके (सेवा जिस उद्देश से शुरू की है वो सार्थक हो रहा है कि नहीं)।

आपका Feedback इस गूगल फॉर्म में submit कीजिए।

Click

इस mind map में,
मुरली की Main Body को ही ध्यान में लिया गया है।
अर्थात सार,प्रश्नोत्तर,धारणा, वरदान, स्लोगन ,अव्यक्त इशारों को include नहीं किया है।

SM: 13/6/26

- ज्ञान
  - आत्मा
    - रूह अपने परमपिता परमात्मा की याद में बैठी है कि हमको रूहानी बाप आकर रिफ्रेश कर शीतल बनायें
    - आत्मा को अब ज्ञान मिला है। स्मृति आई है, हम 84 जन्म लेते हैं
  - परमात्मा
    - बाप
      - पतित-पावन बाप आकर हमको शीतल बनाये।
      - बाबा आया हुआ है, यह ज्ञान वर्षा कर रहे हैं
      - बाप तुमको दु:ख से लिबरेट कर गाइड बन ले जाते हैं।
      - अभी बाप तुम बच्चों की झोली अविनाशी ज्ञान रत्नों से भरते हैं
        - कहते हैं बच्चों, मैं तुम्हारे लिए बैकुण्ठ सौगात मे लाया हूँ। तुम स्वर्गवासी थे, अब पतित नर्कवासी बन पड़े हो।
      - समझाया
        - बाप ने समझाया है अभी तुम ब्राह्मण वर्ण में हो फिर वहीं देवता वर्ण में आयेंगे।
        - अभी तुम बच्चों को बार-बार समझाया जाता है।
          - बाप कहते हैं तुम अपने 84 के चक्र को नहीं जानते हो
          - तुमने 84 जन्मों का चक्र पूरा किया है
          - अभी तुम्हारा यह अन्तिम जन्म है।
            - अब फिर से अपना वर्सा लेना है।
        - बच्चे दु:खी होते हैं, तो बाप को तरस पड़ता है। बाप आये हैं समझाने
      - महिमा
        - एकोअंकार... निराकार, निर-अहंकार।
          - इतनी बड़ी अथॉरिटी होते हुए भी उनको कोई अहंकार नहीं है
  - घर
    - घर का तो किसको पता नहीं है। वह कहते हैं आत्मा ब्रह्म में लीन हो जायेगी
      - तो घर थोड़ेही ठहरा
    - घर में तो रहा जाता है
      - उनको इनकारपोरियल वर्ल्ड कहा जाता है।
    - वहाँ भी निराकारी झाड़ है
      - अभी तुम बच्चे जानते हो हम निराकारी आत्मा निराकार वर्ल्ड में बिन्दी मिसल निवास करते हैं।
  - मुक्तिधाम
    - तुमको मुक्तिधाम में बैठ नहीं जाना है
    - ऐसे बहुत हैं जो सतयुग से लेकर द्वापर कलियुग तक भी मुक्तिधाम में रहते हैं
      - ऐसे नहीं कहेंगे यहाँ आने से मुक्तिधाम अच्छा है।
      - वह तो मच्छरों सदृश्य हो गया। आया और यह गया।
  - मन्दिर
    - यह मन्दिर किसके हैं?
      - जो शुरू से लेकर पार्ट बजाते आये हैं, उन्हों के ही यादगार बनते आये हैं
    - पिछाड़ी में जो आते हैं उन्हों का यादगार है क्या?
      - कुछ भी नहीं।
    - तुम अपनी प्रालब्ध का टाइम पूरा कर जब भक्ति मार्ग में आते हो तब फिर तुम्हारा यादगार तथा शिवबाबा के मन्दिर बनने शुरू होते हैं
  - 84 जन्म
    - 84 जन्मों की सीढ़ी है।
      - पहले हम स्वर्ग में आते हैं फिर उतरते कैसे हैं - यह तुम्हारी बुद्धि में है।
    - हर एक जन्म में भिन्न नाम रूप वाले मित्र-सम्बन्धी आदि मिले हैं
    - तुम जानते हो हम सो देवी-देवता थे जो 84 जन्म ले शूद्र बनें
      - फिर हम सो देवी-देवता बनते हैं
  - भारत
    - इस काम चिता की तपत में भारत एकदम जल मरा है
    - इस ज्ञान वर्षा से भारत अथवा सारी दुनिया शीतल हो जाती है
    - बाबा आया हुआ है, यह ज्ञान वर्षा कर रहे हैं।
      - शीतलता का असर 21 जन्म रहता है।
    - भारत में ही बेहद का सुख था।
      - इस बाप से तुम ऐसा वर्सा पाते हो जो पीढ़ी बाई पीढ़ी तुमको दु:ख नहीं रहेगा
    - भारत को स्वर्ग कहा जाता है, अभी तो नर्क है
    - भारत जैसा पवित्र खण्ड और कोई हो नहीं सकता
      - Solution
  - सतयुग
    - एक ही बार आकर इतना शीतल बनाते हैं।
      - इतना सब कुछ दे देते हैं जो सतयुग में कोई भी चीज़ की उत्कण्ठा नहीं रहती है
    - वहाँ न बरसात, न किसी भी चीज़ की इच्छा रहती है। सदैव बहार ही बहार रहती है। वहाँ कोई भी प्रकार का दु:ख नहीं रहता
    - सूर्य भी सतोप्रधान बन जाता है। कभी तपत नहीं दिखाते हैं।
    - सतयुग में आत्मा और शरीर सतोप्रधान थे
    - सतयुग में हैं सम्पूर्ण निर्विकारी
  - ब्राह्मण
    - जिन्होंने 84 जन्म लिए हैं वही यह नॉलेज सुनेंगे वा जो सतयुग-त्रेता में आने वाले हैं वही आकर ब्राह्मण बनेंगे
    - ब्राह्मण वर्ण अर्थात् ब्राह्मण धर्म स्थापन करने बाप आते हैं
    - ब्रह्मा, ब्राह्मण धर्म स्थापन करते हैं।
    - विराट रूप में ब्राह्मणों की चोटी और शिवबाबा को भूल गये हैं
    - ब्राह्मण लोग गाते भी हैं ब्राह्मण देवताए नमः

ज्ञान 1

- **Comparision**
  - तपत
    - बहुत तपत होती है तो मनुष्य मर पड़ते हैं।
    - गाते भी हैं तपत बुझाये। तपत काहे की?
      - काम चिता की
  - बरसात
    - यह तो बरसात है ज्ञान की
    - बरसात पड़ने से शीतलता हो जाती है। धरती शीतल हो जाती है
  - दुनिया
    - नई दुनिया को सतोप्रधान
    - पुरानी दुनिया को तमोप्रधान
  - कला
    - चढ़ती कला
    - उतरती कला
- **पढ़ाई**
  - तुम बच्चे जानते हो उस पढ़ाई से ही मर्तबा मिलता है।
  - पतित दुनिया में भगवान आकर पतितों को पढ़ाते हैं।
  - बाप कहते हैं - मैं तुम बच्चों को पढ़ाकर पावन बनाता हूँ।
  - इस पढ़ाई से इनकम देखो कितनी भारी है।
    - आधाकल्प के लिए तुम तकदीर बनाते हो।
  - अब तुमको इस रूहानी पढ़ाई का नशा है
  - तुम भी जानते हो हमारी इस पढ़ाई से ऊंच और कोई पढ़ाई है नहीं
  - इन लक्ष्मी-नारायण ने पास्ट में जरूर ऐसी पढ़ाई की है
    - राजयोग सीखे हैं तब महाराजा महारानी बने हैं।
- **झाड़**
  - यह ड्रामा बना हुआ है। बीज और झाड़ को जानना है।
  - इसका नाम ही है वैराइटी धर्मों का झाड़, यह मनुष्य सृष्टि है
  - इनका बीजरूप बाप है, कितनी वैराइटी है
  - हर एक धर्म वाले के फीचर्स न्यारे फिर यहाँ भी एक की शक्ल न मिले दूसरे से
  - कल्प वृक्ष की आयु 5 हजार वर्ष है
- **ड्रामा**
  - मनुष्य एक्टर्स हैं, यहाँ पार्ट बजाने आते हैं
  - यह माण्डवा है, रोशनी के लिए सूर्य चांद आदि हैं
  - यह कोई देवता थोड़ेही हैं, यह तो बत्तियां हैं।
    - परन्तु सर्विस करते हैं, इसलिए देवता कह देते हैं
    - वास्तव में देवतायें कोई सर्विस नहीं करते हैं, सर्विस तो तुम बच्चे करते हो

योग

- याद करते रहें तो खुशी का पारा चढ़ा रहे
- मुझ बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे
- मैं सर्वशक्तिमान् हूँ ना। मुझे याद करो
- याद को ही योग अग्नि कहा जाता है
  - जिससे तुम्हारे पाप दग्ध होंगे
  - तुम पवित्र बन जायेंगे।

धारणा

- अब सम्पूर्ण विकारी बने हो, फिर सम्पूर्ण निर्विकारी देवता पद पाना है
- तुम्हारी आत्मा अभी जानती है आत्म-अभिमानी बनना है तब ही बाप को याद कर सकेंगे।
- बाप के साथ योग टूटने से माया का गोला लग जाता है, मुरझा जाते हैं। याद करते रहें तो खुशी का पारा चढ़ा रहे।
- कोई बड़ा इम्तहान पास करते हैं तो खुशी होती है। समझते हैं बस इसके ऊपर कोई और पढ़ाई नहीं है।
- पोजीशन आदि का अहंकार नहीं रखना है।
  - बाप समान निरहंकारी बनना है
- अपनी झोली ज्ञान रत्नों से भरनी है।
- रूहानी पढ़ाई के नशे में रहना है

सेवा

वास्तव में देवतायें कोई सर्विस नहीं करते हैं, सर्विस तो तुम बच्चे करते हो।